अप्रैल माह की साधनायें

मातंगी जयन्ती पर रस सौन्दर्य युक्त मांत्रोक्त मांतगी साधना

मातंगी महाविद्या गृहस्थ जीवन में रस, भोग-विलास, आनन्द, धन, वैभव, मान, प्रतिष्ठा, व्यापार आदि सभी क्षेत्रों में सफलता प्राप्त कर पूर्ण समृद्धिवान बनाने में सक्षम व तुरंत प्रभाव डालने वाली है। यदि पति-पत्नी के सम्बन्धों में मधुरता न रह गई हो तो इस साधना के माध्यम से सम्बन्ध मधुर हो जाते हैं।

उक्त साधना मातंगी जयन्ती पर जो कि दिनांक 20 अप्रैल 2026 को सम्पन्न करे, साधना प्रक्रिया मार्च की पत्रिका के पृष्ठ संख्या 03 पर अंकित है।

हनुमान जयन्ती पर हनुमान कल्प

हनुमान साधना सम्पन्न करना वास्तव में साधक के लिये समस्त आपदाओं के समक्ष वज्र के समान खड़े हो जाने की प्रक्रिया है, जिससे समस्यायें उससे टकरा कर वापस लौट जायें। इसलिये यह साधना कोई साधना प्रयोग मात्र नहीं है।

उक्त साधना हनुमान जयन्ती पर जो कि दिनांक 02 अप्रैल 2026 को सम्पन्न करे, साधना प्रक्रिया मार्च की पत्रिका के पृष्ठ संख्या 18 से 19 अंकित है।

अक्षय तृतीया पर अक्षय पात्र साधना

केवल दरिद्रता मिटाने से ही जीवन नहीं संवर जाता। दरिद्रता मिटाने के बाद हम सम्पन्न बनें, धन से पूर्णता नहीं आ सकती, उस के साथ यश हो, ऐसा यश हो कि समाज के लोग हमें देखने के लिये तरसें। धन से सम्मान नहीं मिल पाता, वह तो बिल्कुल अलग चीज है, समाज में हमारा प्रभुत्व हो, श्रेष्ठता हो..... और यह तभी हो सकता है जब व्यक्ति में कोई विशेषता हो, कोई अद्वितीयता हो।।

उक्त साधना अक्षय तृतीया पर जो कि दिनांक 19 अप्रैल 2026 को सम्पन्न करे, साधना प्रक्रिया मार्च की पत्रिका के पृष्ठ संख्या 24 से 25 अंकित है।

मातंगी जयन्ती पर राज राजेश्वरी वैभव लक्ष्मी मातंगी साधना

मातंगी साधना को संपन्न करने के बाद साधक शारीरिक, मानसिक और आर्थिक तीनों ही दृष्टियों में पूर्ण स्वस्थ, सुखी और सम्पन्नता से राज-राजेश्वरी युक्त जीवन प्राप्त कर सकता है और गृहस्थ जीवन भी पूर्णतः सुखमय होता है, अतः इस प्रयोग के द्वारा साधक सभी भौतिक सुखों की प्राप्ति करने में सक्षम हो जाता है।

इस साधना को मातंगी जयंती या किसी भी मंगलवार अथवा रविवार के दिन संपन्न कर सकते हैं। इस साधना को कोई भी स्त्री या पुरूष सिद्ध कर सकता है।।

उक्त साधना मातंगी जयन्ती पर जो कि दिनांक 20 अप्रैल 2026 को सम्पन्न करे, साधना प्रक्रिया मार्च की पत्रिका के पृष्ठ संख्या 27 अंकित है।

अक्षय भाग्योदय सिद्धि लक्ष्मी दीक्षा

कर्म नियम तो सदैव ही क्रियाशील रहता है, भले ही हम इस विषय में जाने या न जाने। जीवन में जो कुछ होता है और विशेषकर दुःखद उसके लिये लोग प्रायः भाग्य को ही कारण मानते हैं। परन्तु सब कुछ दृश्य या अदृश्य, ज्ञात या अज्ञात नियम का परिणाम मात्र है। दुःखद परिणाम इस बात का संकेत है कि कोई भूल हो गई है, किसी नियम का उल्लंघन हुआ है और नियम के अनुसार कार्य करने के लिये निरन्तरता की आवश्यकता है। जो कुछ भी सुखद अथवा दुःखद भाग्य प्रतीत होता है वह हमारे द्वारा जाने अथवा अनजाने में किये गये कार्यो का परिणाम मात्र है, चाहे वे कर्म हमने कुछ समय पूर्व अथवा पिछले जीवन में किये हों। इसमें संदेह नहीं कि हमारे पूर्व कर्म हमारी प्रगति में सहायक या बाधक हो सकते हैं परन्तु वर्तमान में प्राप्त सीमाओं के अन्दर हम कर्म करने में स्वतंत्र हैं परन्तु कर्म करने के पश्चात हम उसके परिणाम से ऐसे बंधे हैं कि कोई भी प्रयत्न हमें मुक्त नहीं कर सकता। परन्तु इस कर्म-नियम के अनुसार तो जो कर्म करता है अर्थात् कारण उत्पन्न करता है वही उसको परिवर्तित अथवा समाप्त भी कर सकता है। ऐसी स्थिति में क्या किया जाये, यह प्रश्न हर व्यक्ति के मन में आता है। एक ओर मनुष्य को भाग्य के अधीन बताया गया है, वहीं दूसरी ओर मनुष्य को कर्म के अधीन बताया गया है। वास्तविक सत्य यह है कि जब कर्म और भाग्य दोनों का संयोग होता है तो मनुष्य के जीवन में उन्नति हो सकती है और वह अपना इच्छित फल प्राप्त कर सकता है।

इसीलिये ईश्वरीय कृपा, देव कृपा और गुरू कृपा तो प्रत्येक मनुष्य को प्राप्त होती है। मनुष्य ही अपने बुद्धि, मन, विचार के द्वारा कर्म और भाग्य का संयोग करा सकता है। जब सद्गुरू की कृपा होती है अर्थात् वे भाग्य का द्वार खोलते हैं तो मनुष्य को अपनी कर्म शक्ति पूर्ण रूप से जाग्रत रखनी चाहिये। भगवान कृष्ण ने कहा है-कर्मण्येवाधिकारसते मा फलेषु कदाचन.... अर्थात् मनुष्य हर कार्य को फल की इच्छा से ही नहीं करे। वह निष्ठा पूर्वक अपना कर्त्तव्य करता रहे, कर्म में निरन्तरता बनाये रखता है, तो उसे परिणाम की अवश्य प्राप्ति होती है। उसका भाग्य अवश्य जाग्रत होता है। दुर्भाग्य से सौभाग्य तक की यात्रा कर्म और भाग्य के सहयोग की यात्रा है। अक्षय तृतीया का पावन पर्व-भाग्योदय सिद्धि लक्ष्मी दिवस है। ऐसे शुभ दिवस पर जब सद्गुरूदेव अपनी ऊर्जा तरंगे प्रवाहित करते हैं तो शिष्य को उन ऊर्जा तरंगो को पूर्ण रूप से ग्रहण करना चाहिये। यह इस दिवस की महानता है और उससे भी बड़ी इस दिवस पर सद्गुरू की महानता और कृपा है कि ऐसी महा दीक्षा अपने शिष्यों और साधकों को प्रदान कर रहे हैं।

कर्म और भाग्य का संयोग हर व्यक्ति के जीवन में पूर्ण रूप से प्राप्त नहीं होता, यह तो केवल गुरू कृपा ही होती है जिसके फलस्वरूप शिष्य, साधक को यह वरदान मिलता है। सद्गुरूदेव अपने शिष्य को शक्तिपात दीक्षा के माध्यम से यह विशेष कृपा प्रदान करते हैं। इस बार अक्षय भाग्योदय सिद्धि लक्ष्मी दीक्षा हेतु, अक्षय तृतीया का चयन गुरूदेव ने इसीलिये किया क्योंकि यह दिवस शिवरात्रि, नवरात्रि से भी बढ़कर लक्ष्मी का दिवस है। यह दिवस जीवन में अक्षय तत्व समाहित करने का दिवस है। जब जीवन में क्षय रूक जाता है और कार्य में वृद्धि होने लगती है तो भाग्य भी जाग्रत होता है। व्यक्ति आर्थिक, भौतिक, सामाजिक, आध्यात्मिक उन्नति की ओर अग्रसर होता है। इस दिन प्राप्त की हुई दीक्षा व्यक्ति के जीवन को चैतन्य कर देती है, उसमें सामर्थ्य भर देती है।

आप घर बैठे हैं या यात्रा में है, यह मत सोचिये की गुरूदेव आपके साथ नहीं है। गुरू तो दिव्य तरंगो के माध्यम से सदैव अपने शिष्य के साथ रहते ही हैं। शिष्य अपनी तरंगें जाग्रत कर वह भाव ग्रहण कर सकें यह क्षमता, यह भावना, यह श्रद्धा, यह विश्वास उनमें उत्पन्न होना ही चाहिये।

अक्षय भाग्योदय सिद्धि लक्ष्मी दीक्षा न्यौछावर ₹ 2100/-